(1) يٰسٓ

यासीन

यासीन

(2) وَ الْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ

वल कुर आनिल हकीम

कसम है हिकमतवाले कुरआन की।

(3) اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ

इन्नका लमिनल मुरसलीन

की तुम यकीनन रसूलों में से हो।

(4) عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ

अला सिरातिम मुस्तकीम

सीधे रास्ते पर हो।

(5) تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ

तनजीलल अजीज़िर रहीम

(और ये कुरआन) गालिब और रहम करनेवाली हस्ती का उतारा हुआ है।

(6) لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ

लितुन ज़िरा कौमम मा उनज़िरा आबाउहुम फहुम गाफिलून

ताकि तुम खबरदार करो एक एसी कौम को जिसके बाप -दादा खबरदार न किए गए थे और इस वजह से वो गफलत में पड़े हुआ है।

(7) لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰٓى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ

लकद हक कल कौलु अला अकसरिहिम फहुम ला युअ'मिनून

इनमें से अक्सर लोग अजाब के फैसले के हकदार हो चुके हैं , इसी लिए वो ईमान नही लाते।

(8) اِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِيَ اِلَى الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ

इन्ना जअल्ना फी अअ'ना किहिम अगलालन फहिया इलल अजक़ानि फहुम मुक़महून

हमने उनकी गर्दनों में तौक (पट्टे) दाल दिए है , जिनसे वो ठुड्डियों तक जकढ़े गए हैं , इसलिए वो सर उठाए खरें हैं।

وَ جَعَلْنَا مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ سَدًّا وَّ مِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ (9)

व जअल्ना मिम बैनि ऐदी हिम सद्दव वमिन खलफिहिम सद्दन फअग शैनाहुम फहुम ला युबसिरून

हमने एक दीवार उनके आगे खरीं कर दी है और एक दीवार उनके पीछे। हमने उन्हें ढाँक दिया है , उन्हे अब कुछ नहीँ सूझता।

وَ سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ (10)

वसवाउन अलैहिम अअनजर तहुम अम लम तुनजिरहुम ला युअ'मिनून

उनके लिए बराबर है , तुम उन्हें खबरदार करो या न करो , ये न मानेंगे।

اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَّ اَجْرٍ كَرِيْمٍ (11)

इन्नमा तुन्ज़िरू मनित तब अज़ ज़िकरा व खशियर रहमान बिल्गैब फबश्शिर हु बिमग फिरतिव व अजरिन करीम

तुम तो उसी शख्स को खबरदार कर सकते हो जो नसीहत की पैरवी करे और बेदेखे रहमान खुद से डरे। उसे माफी और बाइज्जत बदले की खुशखबरी दे दो।

اِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتٰى وَ نَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَ اٰثَارَهُمْ وَ كُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ فِيْٓ اِمَامٍ مُّبِيْنٍ (12)

इन्ना नहनु नुहयिल मौता वनकतुबु मा क़द्दमु व आसारहुम वकुल्ला शयइन अहसैनाहु फी इमामिम मुबीन

हम एकीनंन एक दिन मुरदों को जिन्दा करने वाले हैं। जो कुछ काम उनोहने , किए है वो सब हम लिखते जा रहे है , और जो कुछ नीसान उनोहने पीछे चोर है, वो भी हम लिख रहे है। (9) हर चीज को हमने एक खुली किताब में लिख रखा है।

وَ اضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ اِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ (13)

वज़ रिब लहुम मसलन असहाबल करयह इज़ जा अहल मुरसलून

(और ये पेगम्बर) तुम उनके सामने एक बस्ती वालों की मिसाल पेस करो जब उनके पास रसूल आए थे।

اِذْ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوْهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوْٓا اِنَّآ اِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ (14)

इज़ अरसलना इलयहिमुस नैनि फकज जबूहुमा फ अज़ ज़ज्ना बिसा लिसिन फकालू इन्ना इलैकुम मुरसळून

जब हमने उनके(पास सुरू में) दो रसूल भेजे तो उन्होंने दोनों को झुकला दिया , फिर हमने यक तीसरे के जरिए उनकी ताइद की और उन सब ने कहा येकिन जनों हमे तुम्हारे पास रसूल बनाके भेजा गया है।

قَالُوْا مَآ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَاۙ وَ مَآ اَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ شَيْءٍۙ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَكْذِبُوْنَ (15)

कालू मा अन्तुम इल्ला बशरुम मिसळूना वमा अनजलर रहमानु मिन शय इन इन अन्तुम इल्ला तकज़िबुन

उन्होंने कहा तुम्हारी हकीकत इसके सिवा कुछ भी नहीँ की तुम हम जैसे ही आदमी हो। और खुदा -ये-रहमान ने कोई चीज नाजिल नहीँ की है , और तुम सरासर झुट बोल रहे हो।

قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ اِنَّآ اِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُوْنَ (16)

क़ालू रब्बुना यअ'लमु इन्ना इलैकुम लमुरसळून

(उन रसूलों) ने कहा - हमारा परवरदिगार खूब जानता है की हमे वाकेही तुम्हारे पास रसूल बनाकर भेजा गया है।

وَ مَا عَلَيْنَآ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ (17)

वमा अलैना इल्लल बलागुल मुबीन

और तुम्हारी जिम्मेदारी इससे ज्यादा नही है की साफ साफ पैगाम पहुंचा दें।

قَالُوْٓا اِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَ لَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ (18)

कालू इन्ना ततैयरना बिकुम लइल लम तनतहू लनरजु मन्नकूम वला यमस सन्नकुम मिन्ना अज़ाबुन अलीम

बस्ती वालों ने कहा हमने तो तुम्हारे अंदर नहूसत महसूस की है। एकिन जनों अगर तुम बाजं ना आए तो हम तुम पर पत्थर बरशाएंगे और हमरे हाथों तुम्ह बढ़ी दर्दनाक सजा मीलिगी।

قَالُوْا طَآىِٕرُكُمْ مَّعَكُمْ ؕ اَىِٕنْ ذُكِّرْتُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ (19)

कालू ताइरुकुम म अकुम अइन ज़ुक्किरतुम बल अन्तुम क़ौमूम मुस रिफ़ून

रसूलों ने कहा - तुम्हारी नहूसत खुद तुम्हे साथ लगी हुई है। (7) क्या ये बाते इसलिए कर रहे हो की तुम्हें नसीहत की बात पहुंचाई गई है ? असल बात यह है की तुम खुद हद से गुजरे हुए लोग हो।

وَ جَآءَ مِنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ (20)

व जा अमिन अक्सल मदीनति रजुलुय यसआ काला या कौमित तबिउल मुरसलीन

रसूलों ने कहा- तुम्हारी नहूसत ख़ुद तुम्हारे साथ लगी हुई है। (7) क्या ये बातें इसलिये कर रहे हो कि तुम्हें नसीहत की बात पहुँचाई गई है? असल बात यह है कि तुम ख़ुद हद से गुज़रे हुए लोग हो।

اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا يَسْـَٔلُكُمْ اَجْرًا وَّ هُمْ مُّهْتَدُوْنَ (21)

इत तबिऊ मल ला यस अलुकुम अजरौ वहुम मुहतदून

उन लोगों का कहना मान लो जो तुमसे कोई उजरत नहीं माँग रहे, और वे सही रास्ते पर हैं।

وَ مَا لِيَ لَآ اَعْبُدُ الَّذِيْ فَطَرَنِيْ وَ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ (22)

वमालिया ला अअ'बुदुल लज़ी फतरनी व इलैहि तुरजऊन

और भला मैं उस ज़ात की इबादत क्यों न करूँ जिसने मुझे पैदा किया है? और उसी की तरफ़ तुम सबको वापस भेजा जायेगा।

ءَاَتَّخِذُ مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً اِنْ يُّرِدْنِ الرَّحْمٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا وَّ لَا يُنْقِذُوْنِ (23)

अ अत्तखिज़ु मिन दुनिही आलिहतन इय युरिदनिर रहमानु बिजुर रिल ला तुगनि अन्नी शफ़ा अतुहुम शय अव वला यूनकिजून

भला क्या उसे छोड़कर मैं ऐसों को माबूद मानूँ कि अगर ख़ुदा-ए-रहमान मुझे कोई नुक़सान पहुँचाने का इरादा कर ले तो उनकी सिफ़ारिश मेरे किसी काम न आये, और न वे मुझे छुड़ा सकें?

اِنِّیۡۤ اِذًا لَّفِیۡ ضَلٰلٍ مُّبِیۡنٍ (24)

इन्नी इज़ल लफी ज़लालिम मुबीन

अगर मैं ऐसा करूँगा तो यक़ीनन मैं खुली गुमराही में मुब्तला हो जाऊँगा।

اِنِّیۡۤ اٰمَنۡتُ بِرَبِّکُمۡ فَاسۡمَعُوۡنِ (25)

इन्नी आमन्तु बिरब बिकुम फसमऊन

मैं तो तुम्हारे परवर्दिगार पर ईमान ला चुका। अब तुम भी मेरी बात सुन लो।

قِیۡلَ ادۡخُلِ الۡجَنَّۃَ ؕ قَالَ یٰلَیۡتَ قَوۡمِیۡ یَعۡلَمُوۡنَ (26)

कीलद खुलिल जन्नह काल यालैत क़ौमिय यअ'लमून

(आख़िरकार बस्ती वालों ने उसको क़त्ल कर दिया, (9) और अल्लाह तआला की तरफ़ से उससे) कहा गया कि जन्नत में दाख़िल हो जाओ। (10) उसने (जन्नत की नेमतें देखकर) कहा- काश! मेरी क़ौम को मालूम हो जाये।

بِمَا غَفَرَ لِیۡ رَبِّیۡ وَ جَعَلَنِیۡ مِنَ الۡمُکۡرَمِیۡنَ (27)

बिमा गफरली रब्बी व जअलनी मिनल मुकरमीन

कि अल्लाह ने किस तरह मेरी बख़्शिश की है, और मुझे इज़्ज़त वाले लोगों में शामिल किया है!

وَ مَاۤ اَنۡزَلۡنَا عَلٰی قَوۡمِہٖ مِنۡۢ بَعۡدِہٖ مِنۡ جُنۡدٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَ مَا کُنَّا مُنۡزِلِیۡنَ (28)

वमा अन्ज़लना अला क़ौमिही मिन बअ'दिही मिन जुन्दिम मिनस समाइ वमा कुन्ना मुनजलीन

और उस शख़्स के बाद हमने उसकी क़ौम पर आसमान से कोई लश्कर नहीं उतारा, और न हमें उतारने की ज़रूरत थी। (11)

اِنۡ کَانَتۡ اِلَّا صَیۡحَۃً وَّاحِدَۃً فَاِذَا ہُمۡ خٰمِدُوۡنَ (29)

इन कानत इल्ला सैहतौ वाहिदतन फइज़ा हुम् खामिदून

वह तो बस एक ही चिंघाड़ थी जिससे वे एक दम बुझकर रह गये।

یٰحَسۡرَۃً عَلَی الۡعِبَادِ ۚ مَا یَاۡتِیۡہِمۡ مِّنۡ رَّسُوۡلٍ اِلَّا کَانُوۡا بِہٖ یَسۡتَہۡزِءُوۡنَ (30)

या हसरतन अलल इबाद मा यअ'तीहिम मिर रसूलिन इल्ला कानू बिही यस तहज़िउन

अफ़सोस है ऐसे बन्दों के हाल पर ! उनके पास कोई रसूल ऐसा नहीं आया जिसका वे मज़ाक़ न उड़ाते रहे हों।

اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ اَنَّهُمْ اِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُوْنَ (31)

अलम यरौ कम अहलकना क़ब्लहुम मिनल कुरूनि अन्नहुम इलैहिम ला यर जिउन

क्या उन्होंने नहीं देखा कि उनसे पहले हम कितनी क़ौमों को इस तरह हलाक कर चुके हैं कि वे उनके पास लौटकर नहीं आते?

وَ اِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ (32)

वइन कुल्लुल लम्मा जमीउल लदैना मुहज़रून

और ये जितने लोग हैं इन सभी को इकट्ठा करके हमारे सामने हाज़िर किया जायेगा।

وَ اٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ الْمَيْتَةُ ۚ اَحْيَيْنٰهَا وَ اَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَاْكُلُوْنَ (33)

व आयतुल लहुमूल अरज़ुल मैतह अह यनाहा व अखरजना मिन्हा हब्बन फमिनहु यअ कुलून

और उनके लिये एक निशानी वह ज़मीन है जो मुर्दा पड़ी हुई थी। हमने उसे ज़िन्दगी अता की और उससे ग़ल्ला निकाला, जिसकी खुराक ये खाते हैं।

وَ جَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّ اَعْنَابٍ وَّ فَجَّرْنَا فِيْهَا مِنَ الْعُيُوْنِ (34)

व जअलना फीहा जन्नातिम मिन नखीलिव व अअ'नाबिव व फज्जरना फीहा मिनल उयून

और हमने उस ज़मीन में खजूरों और अंगूरों के बाग़ पैदा किये, और ऐसा इन्तिज़ाम किया कि उसमें से पानी के चश्मे फूट निकले।

لِيَاْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ ۙ وَ مَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ (35)

लियअ' कुलु मिन समरिही वमा अमिलत हु अयदीहिम अफला यशकुरून

ताकि ये उसकी पैदावार में से खायें, हालाँकि उसको इनके हाथों ने नहीं बनाया था। (12) क्या फिर भी ये शुक्र अदा नहीं करेंगे?

سُبْحٰنَ الَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ وَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ وَ مِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ (36)

सुब्हानल लज़ी ख़लक़ल अज़वाज कुल्लहा मिम मा तुमबितुल अरज़ू वमिन अनफुसिहिम वमिम मा ला यअलमून

पाक है वह ज़ात जिसने हर चीज़ के जोड़े-जोड़े पैदा किये हैं, उस पैदावार के भी जो ज़मीन उगाती है, और ख़ुद उन इनसानों के भी और उन चीज़ों के भी जिन्हें ये लोग (अभी) जानते तक नहीं हैं।

وَ اٰیَةٌ لَّهُمُ الَّیْلُ ۚۖ-نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ (37)

व आयतुल लहुमूल लैल नसलखु मिन्हुन नहारा फइज़ा हुम् मुजलिमून

और उनके लिये एक और निशानी रात है। हम उस पर से दिन का छिलका उतार लेते हैं तो वे यकायक अंधेरे में रह जाते हैं। (14)

وَ الشَّمْسُ تَجْرِیْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَاؕ-ذٰلِكَ تَقْدِیْرُ الْعَزِیْزِ الْعَلِیْمِ (38)

वश शमसु तजरि लिमुस्त कररिल लहा ज़ालिका तक़्दी रूल अज़ीज़िल अलीम

और सूरज अपने ठिकाने की तरफ़ चला जा रहा है। यह सब उस ज़ात का मुक़र्रर किया निज़ाम (सिस्टम) है जिसका इक्तिदार (ताक़त और इख़्तियार) भी कामिल है, जिसका इल्म भी कामिल है।

وَ الْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِیْمِ (39)

वल कमर कद्दरनाहु मनाज़िला हत्ता आद कल उरजुनिल क़दीम

और चाँद है कि हमने उसकी मन्ज़िलें नाप-तौलकर मुक़र्रर कर दी हैं, यहाँ तक कि वह जब (उन मन्ज़िलों के दौरे से) लौटकर आता है तो खजूर की पुरानी टहनी की तरह (पतला) होकर रह जाता है। (15)

لَا الشَّمْسُ یَنْۢبَغِیْ لَهَاۤ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَ لَا الَّیْلُ سَابِقُ النَّهَارِؕ-وَ كُلٌّ فِیْ فَلَكٍ یَّسْبَحُوْنَ (40)

लश शम्सु यमबगी लहा अन तुद रिकल कमरा वलल लैलु साबिकुन नहार वकुल्लुन फी फलकिय यसबहून

न तो सूरज की यह मजाल है कि वह चाँद को जा पकड़े, (16) और न रात दिन से आगे निकल सकती है। और ये सब अपने-अपने मदार (गर्दिश की जगह) में तैर रहे हैं।

وَ اٰیَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّیَّتَهُمْ فِی الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ (41)

व आयतुल लहुम अन्ना हमलना ज़ुररिय यतहूम फिल फुल्किल मशहून

और उनके लिये एक और निशानी यह है कि हमने उनकी औलाद को भरी हुई कश्ती में सवार किया (17)

وَ خَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ (42)

व खलकना लहुम मिम मिस्लिही मा यरकबून

और हमने उनके लिये उसी जैसी और चीजें भी पैदा की जिन पर ये सवारी करते हैं। (18)

وَ اِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ وَ لَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ (43)

व इन नशअ नुगरिक हुम फला सरीखा लहुम वाला हुम युन्क़जून

और अगर हम चाहें तो इन्हें ग़र्क़ कर डालें, जिसके बाद न तो कोई इनकी फ़रियाद को पहुँचे और न इनकी जान बचाई जा सके।

اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَ مَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ (44)

इल्ला रहमतम मिन्ना व मताअन इलाहीन

लेकिन यह सब हमारी तरफ़ से एक रहमत है, और एक निर्धारित वक़्त तक (ज़िन्दगी का) मज़ा उठाने का मौक़ा है (जो इन्हें दिया जा रहा है)।

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَ مَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ (45)

व इजा कीला लहुमुत तकू मा बैना ऐदीकुम वमा खल्फकुम लअल्लकुम तुरहमून

और जब उनसे कहा जाता है कि बचो उस (अज़ाब) से जो तुम्हारे सामने है, और जो तुम्हारे (मरने के) बाद आयेगा, ताकि तुम पर रहम किया जाये। (तो वह ज़रा कान नहीं धरते)

وَ مَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ (46)

वमा तअ'तीहिम मिन आयतिम मिन आयाति रब्बिहिम इल्ला कानू अन्हा मुअ रिजीन

और उनके परवर्दिगार की निशानियों में से कोई निशानी ऐसी नहीं आती जिससे वे मुँह न मोड़ लेते हों।

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗٓ ۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ (47)

व इज़ा कीला लहुम अन्फिकू मिम्मा रजका कुमुल लाहु क़ालल लज़ीना कफरू लिल लज़ीना आमनू अनुत इमू मल लौ यशाऊल लाहू अत अमह इन अन्तुम इल्ला फ़ी ज़लालिम मुबीन

और जब इनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने तुम्हें जो रिज़्क़ दिया है उसमें से (ग़रीबों पर भी) ख़र्च करो, तो ये काफ़िर लोग मुसलमानों से कहते हैं कि क्या हम उन लोगों को खाना खिलायें जिन्हें अगर अल्लाह चाहता तो ख़ुद खिला देता? (मुसलमानो!) तुम्हारी हक़ीक़त इसके सिवा कुछ भी नहीं कि तुम खुली गुमराही में पड़े हुए हो।

وَ يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (48)

व यकूलूना मता हाज़ल व'अदू इन कुनतुम सादिक़ीन

और कहते है की यह (कियामत का)वायदा कब पूरा होगा ? (मुसलमानों!) बताओ, अगर तुम सच्चे हो।

مَا يَنْظُرُوْنَ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً تَاْخُذُهُمْ وَ هُمْ يَخِصِّمُوْنَ (49)

मा यन ज़ुरूना इल्ला सैहतव वाहिदतन तअ खुज़ुहुम वहुम यखिस सिमून

(दरअसल) ये लोग बस एक चिंघाड़ का इतंजार कर रहे है जो इनकी हुज्जत बाज़ी के ऐन बीच में इन्हें आ पकड़ेगी,

فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ تَوْصِيَةً وَّ لَاۤ اِلٰۤى اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ (50)

फला यस्ता तीऊना तौ सियतव वला इला अहलिहिम यरजिऊन

फिर न ये कोई वसीयत कर सकेंगे और न अपने घर वालो के पास लौट कर जा सकेंगे।

وَ نُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ (51)

व नुफ़िखा फिस सूरि फ़इज़ा हुम मिनल अज्दासि इला रब्बिहिम यन्सिलून

और सूर फूका जाएगा तो यकायक ये अपनी कब्रो से निकलकर अपने परवरदिगार की तरफ तेजी से रवाना हो जाएंगे।

قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ۜ هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَ صَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ (52)

कालू या वय्लना मम ब असना मिम मरक़दिना हाज़ा मा व अदर रहमानु व सदकल मुरसलून

कहेंगे कि हाय हमारी कमबख़्ती ! हमें किसने हमारे मर्क़द (यानी क़ब्र) से उठा खड़ा किया है? (जवाब मिलेगा कि) यह वही चीज़ है जिसका ख़ुदा-ए-रहमान ने वायदा किया था, और पैग़म्बरों ने सच्ची बात कही थी।

اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ (53)

इन कानत इल्ला सयहतव वहिदतन फ़ इज़ा हुम जमीउल लदैना मुहज़रून

और कुछ नहीं बस एक ज़ोर की आवाज़ होगी, जिसके बाद ये सब के सब हमारे सामने हाज़िर कर दिये जायेंगे।

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَّ لَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (54)

फल यौम ला तुज्लमु नफ्नसु शय अव वला तुज्ज़व्ना इल्ला मा कुन्तुम तअ'मलून

चुनाँचे उस दिन किसी शख़्स पर कोई जुल्म नहीं होगा, और तुम्हें किसी और चीज़ का नहीं बल्कि उन्हीं कामों का बदला मिलेगा जो तुम किया करते थे।

اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِيْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ (55)

इन्न अस हाबल जन्न्तल यौमा फ़ी शुगुलिन फाकिहून

जन्नत वाले लोग उस दिन यक़ीनन अपने मशाले में मगन होंगे।

هُمْ وَ اَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ عَلَى الْاَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ (56)

हुम व अज्वा जुहूम फ़ी ज़िलालिन अलल अराइकि मुत्तकिऊन

वे और उनकी बीवियाँ घने सायों में आरामदेह बैठने की जगहों पर टेक लगाये हुए होंगे।

لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّ لَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ (57)

लहुम फ़ीहा फ़ाकिहतुव वलहुम मा यद् दऊन

वहाँ उनके लिये मेवे होंगे, और उन्हें हर वह चीज़ मिलेगी जो वे मंगवायेंगे।

سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ (58)

सलामुन क़ौलम मिर रब्बिर रहीम

रहमत वाले परवर्दिगार की तरफ़ से उन्हें सलाम कहा जायेगा।

وَ امْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ (59)

वम ताज़ुल यौमा अय्युहल मुजरिमून

(और काफ़िरों से कहा जायेगा कि) ऐ मुजरिमो! आज तुम (मोमिनों से) अलग हो जाओ।

اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ (60)

अलम अअ'हद इलैकुम या बनी आदम अल्ला तअ'बुदुश शैतान इन्नहू लकुम अदुववुम मुबीन

ऐ आदम के बेटो! क्या मैंने तुम्हें यह ताकीद नहीं कर दी थी कि तुम शैतान की इबादत न करना, वह तुम्हारा खुला दुश्मन है,

وَ اَنِ اعْبُدُوْنِيْ ۗ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ (61)

व अनिअ बुदूनी हज़ा सिरातुम मुस्तक़ीम

और यह कि तुम मेरी इबादत करना। यही सीधा रास्ता है।

وَ لَقَدْ اَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيْرًا ۭ اَفَلَمْ تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ (62)

व लक़द अज़ल्ला मिन्कुम जिबिल्लन कसीरा अफलम तकूनू तअकिलून

और हक़ीक़त यह है कि शैतान ने तुम में से एक बड़ी ख़ल्क़त (यानी मख़्लूक़ की एक बहुत बड़ी संख्या) को गुमराह कर डाला! तो क्या तुम समझते नहीं थे?

هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ (63)

हाज़िही जहन्नमुल लती कुन्तुम तूअदून

यह है वह जहन्नम जिससे तुम्हें डराया जाता था।

اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ (64)

इस्लौहल यौमा बिमा कुन्तुम तक्फुरून

आज इसमें दाख़िल हो जाओ, क्योंकि तुम कुफ़्र किया करते थे।

اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰٓى اَفْوَاهِهِمْ وَ تُكَلِّمُنَآ اَيْدِيْهِمْ وَ تَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ (65)

अल यौमा नाख्तिमु अल अफ्वा हिहिम व तुकल लिमुना अयदीहिम व तशहदू अरजु लुहुम बिमा कानू यक्सिबून

आज के दिन हम उनके मुँह पर मुहर लगा देंगे, और उनके हाथ हमसे बात करेंगे, और उनके पाँव गवाही देंगे कि वे क्या कमाई किया करते थे। (19)

وَ لَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى اَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى يُبْصِرُوْنَ (66)

व लौ नशाउ लता मसना अला अअ'युनिहिम फ़स तबकुस सिराता फ अन्ना युबसिरून

और अगर हम चाहें तो (यहीं दुनिया में) इनकी आँखें मलियामेट कर दें, फिर ये रास्ते (की तलाश) में भागे फिरें, लेकिन इन्हें कहाँ कुछ सुझाई देगा?

وَ لَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مُضِيًّا وَّ لَا يَرْجِعُوْنَ (67)

व लौ नशाउ ल मसखना हुम अला मका नतिहिम फमस तताऊ मुजिय यौ वला यर जिऊन

और अगर हम चाहें तो इनकी अपनी जगह पर बैठे-बैठे इनकी सूरतें इस तरह मस्ख़ कर (यानी बिगाड़) दें कि ये न आगे बढ़ सकें और न पीछे लौट सकें।

وَ مَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِى الْخَلْقِ-اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ (68)

वमन नुअम मिरहु नुनक किसहु फिल खल्क अफला यअ' किलून

और हम जिस शख़्स को लम्बी उम्र देते हैं उसे तख़्लीक़ी (पैदाईश के) एतिबार से उलट ही देते हैं। (20) क्या फिर भी उन्हें अक़्ल नहीं आती?

وَ مَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَ مَا يَنْۢبَغِىْ لَهٗ-اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّ قُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ (69)

वमा अल्लम नाहुश शिअ'रा वमा यम्बगी लह इन हुवा इल्ला जिक रुव वकुर आनुम मुबीन

और हमने (अपने) इन (पैग़म्बर) को न शायरी सिखाई है, और न वह उनकी शान के लायक़ है। (21) यह तो बस एक नसीहत की बात है, और ऐसा कुरआन जो हक़ीक़त को खोल-खोलकर बयान करता है।

لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَّ يَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ (70)

लियुन जिरा मन काना हय्यव व यहिक क़ल कौलु अलल काफ़िरीन

ताकि हर उस शख़्स को ख़बरदार करे जो ज़िन्दा हो, (22) और ताकि कुफ़ करने वालों पर हुज्जत (दलील) पूरी हो जाये।

اَوَ لَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ اَيْدِيْنَآ اَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ (71)

अव लम यरव अन्ना खलक्ना लहुम मिम्मा अमिलत अय्दीना अन आमन फहुम लहा मालिकून

और क्या उन्होंने यह नहीं देखा कि हमने अपने हाथों की बनाई हुई चीज़ों में से उनके लिये मवेशी (जानवर) पैदा किये, और ये उनके मालिक बने हुए हैं?

وَ ذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَ مِنْهَا يَاْكُلُوْنَ (72)

व ज़ल लल नाहा लहुम फ मिन्हा रकू बुहुम व मिन्हा यअ'कुलून

और हमने उन मवेशियों को इनके क़ाबू में दे दिया है, चुनाँचे उनमें से कुछ वो हैं जो इनकी सवारी बने हुए हैं और कुछ वो हैं जिन्हें ये खाते हैं।

وَ لَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَ مَشَارِبُ-اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ (73)

व लहुम फ़ीहा मनाफ़िउ व मशारिबु अफला यश्कुरून

और इनको उन मवेशियों से और भी फ़ायदे और लाभ हासिल होते हैं, और पीने की चीजें मिलती हैं। क्या फिर भी ये शुक्र अदा नहीं करेंगे?

وَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ (74)

वत तखजू मिन दूनिल लाहि आलिहतल लअल्लहुम युन्सरून

और इन्होंने अल्लाह को छोड़कर इस उम्मीद पर दूसरे ख़ुदा बना रखे हैं कि इन्हें (उनसे) मदद मिले।

لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ-وَ هُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ (75)

ला यस्ता तीऊना नस रहुम वहुम लहुम जुन्दुम मुह्ज़रून

(हालाँकि) उनमें यह ताक़त ही नहीं है कि इनकी मदद कर सकें, बल्कि वे इनके लिये एक ऐसा (मुखालिफ़) लश्कर बनेंगे जिसे (क़ियामत में इनके सामने) हाज़िर कर लिया जायेगा। (23)

فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ-اِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَ مَا يُعْلِنُوْنَ (76)

फला यह्ज़ुन्का क़व्लुहुम इन्ना नअ'लमु मा युसिर रूना वमा युअ'लिनून

ग़ज़ब कि (ऐ पैग़म्बर!) इनकी बातें तुम्हें रंजीदा (परेशान और दुखी) न करें। यक़ीन जानो हमें सब मालूम है कि ये क्या कुछ छुपाते और क्या कुछ ज़ाहिर करते हैं।

اَوَ لَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ (77)

अव लम यरल इंसानु अन्ना खलक्नाहू मिन नुत्फ़तिन फ़ इज़ा हुवा खासीमुम मुबीन

और क्या इनसान ने यह नहीं देखा कि हमने उसे नुत्फ़े (वीर्य की बूँद) से पैदा किया था? फिर अचानक वह खुल्लम-खुल्ला झगड़ा करने वाला बन गया।

وَ ضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّ نَسِیَ خَلْقَهٗؕ-قَالَ مَنْ یُّحْیِ الْعِظَامَ وَ هِیَ رَمِیْمٌ (78)

व ज़रबा लना मसलव व नसिया खल्कह काला मय युहयिल इजामा व हिय रमीम

हमारे बारे में तो वह बातें बनाता है और खुद अपनी पैदाईश को भुला बैठा है। कहता है कि उन हड्डियों को कौन ज़िन्दगी देगा जबकि वे गल चुकी होंगी?

قُلْ یُحْیِیْهَا الَّذِیْۤ اَنْشَاَهَاۤ اَوَّلَ مَرَّةٍؕ-وَ هُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِیْمُ (79)

कुल युहयीहल लज़ी अनश अहा अव्वला मर्रह वहुवा बिकुललीं खल किन अलीम

कह दो कि उनको वही ज़िन्दगी देगा जिसने उन्हें पहली बार पैदा किया था, और वह पैदा करने का हर काम जानता है।

الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ نَارًا فَاِذَاۤ اَنْتُمْ مِّنْهُ تُوْقِدُوْنَ (80)

अल्लज़ी जअला लकुम मिनश शजरिल अख्ज़रि नारन फ़ इज़ा अन्तुम मिन्हु तूकिदून

वही है जिसने तुम्हारे लिये सरसब्ज़ (हरे-भरे) पेड़ से आग पैदा कर दी है, (24) फिर तुम ज़रा सी देर में उससे सुलगाने का काम ले लेते हो।

اَوَ لَیْسَ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰۤى اَنْ یَّخْلُقَ مِثْلَهُمْؕ-بَلٰىۗ-وَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِیْمُ (81)

अवा लैसल लज़ी खलक़स समावाती वल अरज़ा बिक़ादिरिन अला य यख्लुक़ा मिस्लहुम बला वहुवल खल्लाकुल अलीम

भला जिस ज़ात ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है, क्या वह इस बात पर क़ादिर नहीं है कि इन जैसों को (दोबारा) पैदा कर सके? क्यों नहीं! जबकि वह सब कुछ पैदा करने की पूरी महारत रखता है।

اِنَّمَاۤ اَمْرُهٗۤ اِذَاۤ اَرَادَ شَیْــٴًـا اَنْ یَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ (82)

इन्नमा अमरुहू इज़ा अरादा शय अन अय यकूला लहू कुन फयकून

उसका मामला तो यह है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा कर ले तो सिर्फ़ इतना कहता है कि हो जा बस वह हो जाती है।

فَسُبْحٰنَ الَّذِیْ بِیَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَیْءٍ وَّ اِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ (83)

फसुब हानल लज़ी बियदिही मलकूतु कुल्ली शय इव व इलैहि तुरज उन

ग़र्ज़ कि पाक है वह ज़ात जिसके हाथ में हर चीज़ की हुकूमत है, और उसी की तरफ़ तुम सब को आख़िरकार ले जाया जायेगा।

Read Related Article			
Surah Fatiha	***Surah Yaseen***	***Surah Qadr***	***Surah Falaq***